भग विभाग

शादश

दिनांक 30 अगस्त, 1984

सं. श्रो. वि√िहसार/119-83/32699. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि .।. मैनेजिंग डायरैक्टर हरियाणा राज्य माईनर सिचाई टियुवर्वेस निगम, चूंण्डीगढ़, 2. एक्सीयन हरियाणा राज्य माइनर गिचाई टियुवर्वेल निगम डिविजन नं∘ 1 फतहाबाद के श्रमिक श्री वेट प्रकाश तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद निखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्ट करना वांछनीय समझते हैं≼

इस लिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारी 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई श्रामित्तमों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा माकारी श्रिध्सूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक ह नवम्बर, 1970 के खाय पठित सरकारी श्रीध्सूचना सं. 3864-ए एन श्रो (ई)-70/1348, दिनांक 3 मई, 1970 द्वारा • उक्त श्रीधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतू निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीयक के विच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विचाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री वेद प्रकाश की सेवाग्रों का समापन त्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो. वि/रोहतक/61-84/32706.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. i. मैनेजिंग डायरकर कान्फेड हरियाण., 2. जिला प्रबन्धक कान्फेड ग्रीन रोड, रोहतक के श्रीमिक श्री जोरावर सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई श्रोद्योगिक विवाद है,

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपान विवाद को न्यधनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, अधिगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिगूचना सं 9641-1-धम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साय-पठित सरकारी अधिसूचना सं 3864-एएस और (ई)-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित अस न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उपसे सुभंगत या उपसे मंधित नीचे लिखा मामला न्यायितणिय हेतु निद्धित करते हैं जो कि उक्त प्रवत्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाहग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:---

क्या श्री जोरावर सिंह, की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो. वि/रोहतक/63-84/32714—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि । नियंत्रक हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ़, 2. महा प्रवन्धक हरियाणा राज्य परिवहन रोहतक, केश्रमिक श्री शि किमार तथा उस के प्रधन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद हैं;

भ्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाळनीय समझते हैं,;

इस लिये, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) इारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरनारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-24/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधसूचना सं. 3864-ए. एस. ग्री. (ई)-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम त्यायालय, रोहतक, को विधादग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला त्यायिनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत सुबंधित मामला है :--

क्याश्री किन कुमार की सेवाओं का समापून न्यायोचित तथा शिक है ? यदि नहीं, तो वह किस राह्त का हकदार है ?